कार्यक्षेत्र से रिपोर्ट - 8

1 जून 2020

COVID महामारी के दौरान अम्फान चक्रवात का सामना

गूँज द्वारा महामारी के दौरान भी झारखाली क्षेत्र के लोगो के साथ मिलकर, जो ज़िंदगिया इस बड़े अम्फान चक्रवात के कारण पटरी से उतर गई है, वहाँ के लोगो के जीवन को पुनः संचालित किया जा रहा है। क्षेत्र के परबातिपुर गाँव में हमारी टीम द्वारा प्रोत्साहित करने पर ग्रामीणों द्वारा नदी बाँध की मरम्मत, सब्ज़ी बागानों को लगाने तथा खेल के मैदान के रख-रखाव की दिशा में काम किया गया, जबकि प्रजाघेरी गाँव में विद्यालय के खेल के मैदान को बनाना और गाँव की सड़क बनाने जैसी गतिविधिया की गयी। इसके अलावा सहीद नगर के ग्रामीणों ने दो सामुदायिक सब्ज़ी बागान स्थापित किए और एक ईंट से निर्मित सड़क की मरम्मत की, जबकि परबातिपुर गांव के स्थानीय लोगो ने माल्टा नदी पर क्षतिग्रस्त नदी के बाँध की मरम्मत की। ओडिशा में जगतसिहपुर और केंद्रपाड़ा जिलों में राहत सहायता के रूप में सफाई तथा प्रसाधन सामग्रियों को DFW किट के साथ वितरित किया गया।

सुंदरबन... जहाँ ज़ख्म कभी नहीं भरते...

सुंदरबन के लोग आयला चक्रवात से हुई तबाही से अभी उभरे भी नहीं थे की अम्फान चक्रवात ने उन्हें आहत कर दिया। पश्चिम बंगाल के उत्तर 24 परगना, दक्षिण 24 परगना और पूर्वी मेदनीपुर जहाँ हमारी टीम राहत कार्यो में जुटी हुई है, इस तूफ़ान ने नदी तटबंधों को तोड़ दिया है, खेत खारे पानी से भर गए है और घरो को तबाह कर दिया है, इसके अलावा इस क्षेत्र में खाद्य सुरक्षा भी प्रभावित हुई है।

हम वहां कार्यरत हैं... आपका साथ चाहिए...।

कार्यक्षेत्र की मुख्य गतिविधियां :

- हमने सम्पूर्ण देश के अपने नेटवर्क को सक्रिय किया और हमारी क्षेत्रीय टीमों के अलावा 280 से अधिक सहभागी संस्थाओं के साथ 23 राज्यों तथा केंद्र शासित प्रदेशो में काम शुरू हो गया है।
- चौदह लाख किलो से अधिक राशन तथा अन्य जरुरी सामग्री पहुंचाई जा चुकी है।
- 80,000 किलो से अधिक सब्ज़िया तथा फल स्थानीय किसानो से खरीदा गया।
- स्वास्थ्य रक्षा संबंधी पहल: 2,68,000 फेस मास्क तथा 96,000 से अधिक सेनेटरी पैड बनाए गए।
- 1,32,000 लोगो तक तैयार भोजन पहुंचाया गया।
- 200 से अधिक सब्ज़ी बागान लगाए गए।

'वापसी ' : आजीविका सुनिश्चित करना, ज़िंदगियों का फिर से पटरी पर लौटाना

'वापसी' गूँज द्वारा आजमाई और परीक्षित ग्रामीण आजीविका सम्बन्धी पहल है जिसे कई आपदाओं में लागू किया गया, बिहार में 2008 में कोसी नदी में बाढ़ आने के बाद इसे 20,000 लोगो के साथ शुरू किया गया था, उत्तराखण्ड में आई बाढ़ और अभी हाल ही में केरल में आयी बाढ़ में भी इसे लागू किया गया।

वापसी के 4 मार्गदर्शक सिद्धांत

1. लोगो की जानकारी और उनकी इच्छाओं को महत्व देना।
2. ग्राम समुदायों की सामूहिक जरूरतों पर ध्यान देना।
3. जहाँ तक संभव हो गरिमा पर ध्यान देना, ना की दान पर।
4. लोगो को आत्मनिर्भर बनाना।

वापसी आपदा प्रभावित लोगो को उनके भरण-पोषण के लिए स्थानीय कम निवेश वाले ग्रामीण वयवसायो से जोड़ने के संबंध में है। व्यापक सर्वेक्षण के बाद व्यवसायिक किट तैयार कर प्रदान किया जाता है। भुगतान रुपयों में करने के बजाय प्राप्तकर्ता अपने स्वयं के समुदायों के लिए सवैच्छिक श्रम के माध्यम से करता है। इसका प्रभाव व्यक्तियों और समुदायों पर बहुपक्षीय, लघु और दीर्घकालिक है तथा प्राकृतिक मुद्दों पर है जैसे - प्रवासन पर , प्राकृतिक संसाधनों के निर्वाह पर और क्षेत्र के आर्थिक महत्व पर।
'वापसी' के संबंध में बिहार की एक कहानी- https://goonj.org/vaapsi-restoring-lives

राहत कोविद कार्य क्षेत्र से जानकारी:

एक के बाद एक प्राकृतिक चुनौतियां हमारे बीच आ रही है, हम 23 राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशो में अपने चल रहे राहत कोविद कार्यो में जुटे हुए है। जरूरतमंद लोगो तक चौदह लाख किलो से अधिक राशन और अन्य आवश्यक सामग्री पहुंचाई जा चुकी है। लोगो की तात्कालिक आवश्यकताओं को पूरा करते हुए हम उन्हें आत्मनिर्भर बनाने और उनकी आजीविका पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे है। इस प्रकार राहत कोविद के सम्बन्ध में काम करते हुए काम के बदले सम्मान (DFW) और वापसी पहल को भी प्रोत्साहित किया जा रहा है।

प्रभावित लोगो तक पहुंची तत्काल राहत सहायता

- **चौदह लाख किलो राशन तथा अन्य आवश्यक सामग्री**, राशन किट तथा सामुदायिक रसोइयों के माध्यम से पहुंचाई गयी।
- **94,000 से अधिक** परिवारों तक पहुंच।
- **1,32,000 से अधिक तैयार भोजन** लोगो तक पहुंचाया गया।

स्थानीय सामुदायिक रसोइयों को सहयोग

- **23 सामुदायिक रसोइयों को 1,51,000 भोजन के लिए 45,000 किलो राशन** के माध्यम से सहयोग।

स्वास्थ्य रक्षा संबंधित पहल

- **2,68,000 फेस मास्क तथा 96,000 से अधिक** कपडे से बने सेनेटरी पैड (माय पैड) तैयार किए गए।

अभावो को भरने के प्रयास तथा नेटवर्क की पहुँच बढ़ाना

- **23 राज्यों तथा केंद्रशासित प्रदेशो में 280 सहभागी संस्थाओ** के साथ कार्यो की शुरुआत।
- उद्योग जगत, संगठनों, तथा व्यक्तियों के साथ व्यापक स्तर पर काम।

राहत किट के लिए किसानो से सीधे तौर पर 80,000 किलो से अधिक फल और सब्जिया खरीदी गयी।

किट के माध्यम से दिया जा रहा अन्य सामान

- साबुन तथा स्वच्छता संबंधी सामान- **1,31,000 से अधिक**
- झोला (कपड़े से बना बैग)- **6,000**
- आसन, सुजनी और दरी- **9000 से अधिक**
- किताबे एवं खिलौने- **2000 से अधिक**

काम के बदले सम्मान (DFW)

- 90 से अधिक गतिविधियों का आयोजन किया गया।
- **200 से अधिक सब्जी बागान** लगाए गए।

वापसी

- किसानो को **300 किलो से अधिक बीज** उपलब्ध कराया गया।
- **14,000 से अधिक पौध** (सब्जियों के) उपलब्ध कराए गए।

हमारा सहयोग कीजिये :

तत्काल आवश्यकता

- थोक रूप में सामग्री सहयोग- https://bit.ly/2yR000h

- राशि सहयोग के लिये- https://bit.ly/3b52CpJ
- यदि आप गूँज के लिए फण्ड रेजिंग कैंपेन शुरू करना चाहते है तो कृपया हमे jibin@goonj.org पर मेल करे।
- अधिक जानकारी के लिए हमे mail@goonj.org पर लिखे।

वेबिनार और चर्चाए:

1. गूँज फ़ेलोशिप: संभावनाओ के संसार की एक खोज- https://bit.ly/2Y07neG
2. कोविद का भारतीय संदर्भ में प्रदर्शनऔर हम क्या भूमिका निभा सकते हैं- https://bit.ly/36ZbBY4
3. गूँज की दृष्टि में क्या बेहतर है- https://bit.ly/36YXlyL
4. अम्फान चक्रवात के दुष्परिणाम- https://bit.ly/2XrMQAU

पिछली रिपोर्ट

- 27 अप्रैल- भुला दिए गए ग्रामीण भारत को सहेजने की कोशिश ।
- 4 मई- ग्रामीण भारत तक पहुँच।
- 11 मई- समाज के वंचित और कमजोर वर्ग को नजरंदाज़ ना करना।
- 18 मई- गरिमापूर्ण जीवन सबका अधिकार।
- 25 मई- जमीनी स्तर पर 8 प्रयोग।

रिपोर्ट को पढ़ने के लिए- https://bit.ly/2K1JH3e

गूँज कार्यालय में नए दिशानिर्देशों के अनुसार पहले की ही भांति पुरानी/नई सामग्रियों को स्वीकार किया जा रहा है। अधिक जानकारी के लिए- www.goonj.org पर देखे।